MAM SPEAKS

पुस्तक पठन संस्कृति विकसित हो

भारत की सांस्कृतिक समृद्धि केवल उसके पर्वों, त्योहारों, उत्सवों और कला में ही नहीं, बल्कि ज्ञान और पठन-पाठन की उसकी परंपरा में भी झलकती है। प्राचीन काल से लेकर डिजिटल युग तक भारतीय समाज ने पुस्तकों, ग्रंथों और अन्य माध्यमों के जरिए ज्ञान प्राप्त करने तथा उस ज्ञान को साझा करने की अपनी अनूठी शैली विकसित की है। आज जब भारत विश्व के सबसे बड़े पुस्तक बाजारों में से एक बन चुका है, यह समझना आवश्यक है कि यहाँ पठन-पाठन की आदत कैसे विकसित हुई और यह समाज में किस तरह से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी बदलावों के साथ जुड़ी रही है।

हजारों वर्ष पूर्व भारत में पुस्तक पठन की परंपरा मौखिक शिक्षण से शुरू हुई। वेद, उपनिषद्, रामायण और महाभारत जैसे ग्रंथों का अध्ययन गुरु-शिष्य परंपरा में श्रुति एवं स्मृति के माध्यम से किया जाता था। भाषा के जन्म के साथ हस्तलिपि में ताड़पत्र, भोजपत्र और ताम्रपत्रों पर ग्रंथ लिखे जाने लगे। नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी इन ग्रंथों का अध्ययन करते थे।

१५वीं शताब्दी में छापाखाने और १६वीं शताब्दी में मुद्रण के आगमन से भारतीय पठन संस्कृति में क्रांतिकारी बदलाव आए। गोवा में सन् १५५६ में पहला प्रेस स्थापित हुआ तथा इसके बाद बंगाल, मद्रास और बंबई में मुद्रण कार्य शुरू हुआ। ब्रिटिश शासन के दौरान मिशनरी विद्यालयों और अंग्रजी शिक्षा के माध्यम से विज्ञान, इतिहास एवं राजनीति जैसे आधुनिक विषयों का प्रसार हुआ। इसी समय पत्रिकाएँ व समाचार-पत्र, जैसे-'बंगाल गजट', 'अमृत बाजार पत्रिका' और 'केसरी' पत्र पाठकों में पढ़ने की आदत विकसित करने का माध्यम बने।

सन् १९४७ के बाद भारत की सबसे बड़ी चुनौति थी- साक्षरता का विस्तार करना। राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, सर्व शिक्षा अभियान और नई शिक्षा नीति जैसी सरकारी पहलें ग्रामीण तथा पिछड़े क्षेत्रों तक शिक्षा पहुँचाने में मददगार साबित हुई।

१९५० से १९८० के दशक में पुस्तक प्रकाशन का स्वर्ण युग देखा गया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, साहित्य अकादमी और चिल्ड्रेन बुक ट्रस्ट जैसी संस्थाओं ने सस्ती एवं गुणवत्तापूर्ण पूस्तकें प्रकाशित कीं। दिल्ली विश्व पुस्तक मेला (१९७२ से) पठन-पाठन की सांस्कृतिक उत्सव का रूप दिया। इस दौर में आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भारत की २२ भाषाओं तथा अन्य भाषाओं में उपन्यास, कविता, नाटक एवं बाल साहित्य का अभूतपूर्व विकास हुआ।

१९८० और १९९० के दशक में मध्य वर्ग का उदय हुआ। टी०वी० और सिनेमा के साथ-साथ पुस्तकें बौद्धिक मनोरंजन का प्रमुख माध्यम रहीं। विद्यालय और कॉलेज पुस्तकालयों ने छात्रों में अध्ययन के साथ सामान्य पठन की रूचि बढ़ाई।

वर्तमान काल में इन्टरनेट, मोबाइल और सस्ते डेटा ने पढ़ने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया। Amazon Kindle, Google Books और Storytel जैसे मंचों ने हजारों-हजार पुस्तकें मोबाइल पर उपलब्ध करा दीं। ऑडियोबुक्स के माध्यम से हमारे युवा जन यात्राओं के दौरान भी साहित्य से जुड़े रह सकते हैं। ऑनलाइन पत्रिकाएँ, ब्लॉग्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने नए लेखकों को मंच दिया। Bookstagram, YouTube समीक्षा और Goodreads पर पाठकों की सक्रिय भागीदारी ने पठन को फिर से सामाजिक एवं बहुभाषिक रूप दिया।

वर्तमान में भारतीय प्रकाशन उद्योग विश्व में पाँचवें स्थान पर है और अगले तीन वर्षों में हम प्रथम तीन में अपनी जगह बना लेंगे। १४५ करोड़ भारतीय पाठकों का संसार विस्तृत होने वाला है।

हालाँकि, तकनीक ने पुस्तकों को सुलभ बनाया, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं-सोशल मीडिया और छोटी व उथली सूचनाओं ने गहन पठन को प्रभावित किया। व्यस्त शहरी जीवन में लंबा पढ़ने का उचित समय नहीं मिल पाता। ग्रामीण क्षेत्रों में पुस्तकों की उपलब्धता सीमित है। अंग्रेजी बनाम क्षेत्रीय भाषाओं में प्रकाशन का असंतुलन है।

आने वाले वर्षों में भारत में पठन के निम्न रुझान देखे जा सकते हैं-

- डिजिटल और प्रिंट का सह-अस्तित्व।
- क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण साहित्य का विकास।
- बच्चों के लिए एडुटेक-आधारित कहानी ऐप्स।
- पर्यावरण और सामाजिक विषयों पर साहित्य में रुचि।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल लाइब्रेरी नेटवर्क का विस्तार।

भारत में पढ़ने का भविष्य तब होगा उज्जवल, जब इसे केवल परीक्षा का साधन नहीं, बल्कि सृजन, चिंतन और आनंद का माध्यम बनाया जाएगा। कदाचित यह हम सभी साहित्य-सेवियों का दायित्व भी है। भारत एक विकसित राष्ट्र तभी बन पाएगा, जब हर भारतीय पुस्तक संस्कृति में विश्वास करेगा और खूब पढ़ेगा।

Prof. Vijya Singh
(HOD, Pol. Science) R.K. College, Madhubani